



सोया कृषकों के लिए सलाह Advisory for Soybean Farmers



फोन : 0731-2476188, Fax: 2470520
वेब साइट : <https://iisrindore.icar.gov.in>
ई मेल : director.soybean@icar.gov.in / dsrddirector@gmail.com

YouTube लिंक: YouTube channel: <https://www.youtube.com/channel/UCNdY5AsfPZqsCO8lxAuSyQ>
Facebook Page: <https://www.facebook.com/ICAR-Indian-Institute-of-Soybean-Research-Indore-507415769433553>
फेसबुक: <https://www.facebook.com/icar.nsr/>
X: @ICARNSRI Whatsapp & Telegram: NSRI Soy Farmers

© ICAR-NSRI

यह विस्तार बुलेटिन सोया कृषकों के सार्वजनिक हित में और विशुद्ध रूप से भारत भर के सोयाबीन उत्पादकों के लाभ के लिए जारी की गई है। यह आईसीएआर-राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान और सोयाबीन पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के वैज्ञानिकों की बौद्धिक सम्पदा है। सोया कृषकों के अतिरिक्त किसी व्यक्ति या संगठन द्वारा किसी प्रकार का व्यावसायिक/लाभ कमाने के लिए इसका आंशिक/संपूर्ण उपयोग ICAR-NSRI को बिना उचित श्रेय दिए सख्त वर्जित है।

Disclaimer: This document/Advisory is issued in the public interest and purely for the benefit of the soybean growers across India. This is the sole intellectual output of scientists of ICAR-National Soybean Research Institute, and All India Coordinated Research Project on Soybean. Its use by any organization (other than farmers) for any commercial/profit making as part/whole/copying without giving due credit is strictly prohibited.



फ़ाइल क्रमांक: टेक 10-6/2025

दिनांक: 02.06.2025

सोयाबीन कृषकों के लिए साप्ताहिक सलाह / Weekly Advisory for Soybean Farmers





(2-8 जून 2025/ 2-8 June 2025)





अत्यंत महत्वपूर्ण/Most important

देश के कुछ क्षेत्रों में असामयिक/ मानसून पूर्व बारिश होने के समाचार हैं। पूर्व अनुभव के अनुसार उत्पादन की दृष्टि से 10 जून के पश्चात सोयाबीन की बोवनी करना अत्यंत लाभकारी देखा गया है। अतः सोया कृषकों को सलाह है कि वे मानसून के आगमन के पश्चात ही सोयाबीन की बोवनी करें। Unseasonal/pre-monsoon rains have been experienced in some parts of the country. Good yield levels are expected if the sowing is done after 10th of July. Therefore, soy farmers are advised not to complete sowing before the onset of monsoon.

1. सोयाबीन की खेती के लिए आदान (बीज दर, खाद-उर्वरक, फफूंदनाशक, खरपतवारनाशक, जैविक कल्चर और उनकी आवश्यक मात्रा आदि की जानकारी परिशिष्ट 1 में दी गई है।) का क्रय एवं उपलब्धता सुनिश्चित करें। Ensure availability of other critical inputs (fertilizers, weedicides, fungicides and cultures for seed treatment etc. as given in Annexure-1).
2. किस्मों का चयन: अपने जलवायु क्षेत्र के लिए अनुकूल विभिन्न समयावधि में पकनेवाली न्यूनतम 2-3 नोटिफाइड सोयाबीन की किस्मों का चयन कर बीज उपलब्धता सुनिश्चित करें (परिशिष्ट 2).
ऐसे किसान जो सोयाबीन के बाद आलू, प्याज, लहसुन जैसी फसल लेकर गेहूं/चना लगते हो, सोयाबीन की शीघ्र समयावधि वाली किस्म को लगाये। उसी प्रकार वर्ष में केवल दो फसलें लेने वाले कृषक मध्यम/अधिक समय परिपक्वता अवधि वाली किस्मों का चयन करें।



	<p>Choice of cultivars: Select 2-3 soybean varieties recommended for your area and ensure the availability of seed (Annexure-2).</p> <p>Farmers who grows three crops in succession (Soybean: Potato/Garlic/Onion: Wheat/Chickpea for example) are advised to select short duration soybean varieties. Similarly those who are able to take only one succeeding crop after soybean (Wheat/Chickpea) are advised to select medium/long duration soybean varieties for ensuring maximum soybean yield.</p>	
3.	<p>एकल किस्म की खेती के स्थान पर न्यूनतम 2-3 किस्मों की खेती करने में जोखिम कम होती हैं. अतः कृषकों को सलाह हैं कि कृपया स्थानीय जलवायु अनुरूप अपने क्षेत्र के लिए अनुशंसित किस्मों में से न्यूनतम 2-3 किस्मों का चयन कर बीज उपलब्धता सुनिश्चित करें तथा बीज गुणवत्ता जांच कर 70% अंकुरण सुनिश्चित करें.</p>	
	<p>Cultivation of 2-3 soybean varieties reduces the risk in uncertain yield levels due to biotic and abiotic factors. Therefore, farmers are advised to select 2-3 soybean varieties recommended for their area, ensure their seed availability and conduct germination test (Minimum 70%).</p>	
4.	<p>देश के विभिन्न क्षेत्रों में सोयाबीन की बोवनी के उपयुक्त समय की जानकारी तालिका-1 में दी गई हैं. मध्य क्षेत्र के लिए जून माह के दुसरे सप्ताह से जुलाई माह के प्रथम सप्ताह का समय सबसे उचित होता. लेकिन सलाह हैं कि मानसून के आगमन के पश्चात ही, न्यूनतम 10 सेमी वर्षा होने की स्थिति में सोयाबीन की बोवनी करें.</p> <p>The second week of June to first week of July is optimum time for sowing of soybean. However, it is advised that the sowing may be done after the arrival of monsoon, ensuring nearly 100 mm rainfall. The zone-wise information about the time of sowing and seed rate is given in Table-1.</p>	
5.	<p>उत्पादन में स्थिरता की दृष्टि से 3 वर्ष में एक बार खेत की गहरी जुताई करना लाभकारी होता हैं. अतः ऐसे किसान जिन्होंने इस पद्धति को नहीं अपनाया हैं, कृपया इस समय अपने खेत की गहरी जुताई करें. उसके पश्चात विपरीत दिशा में कल्टीवेटर एवं पाटा चलाकर खेत को तैयार करें. सामान्य वर्षों में विपरीत दिशा में दो बार कल्टीवेटर एवं पाटा चलाकर खेत को तैयार करें.</p> <p>Deep summer ploughing once in 3 years, is beneficial practice in order to have yield stability. Therefore, those farmers who have not yet done this, are advised to carry out the same followed by two criss-cross harrowing. In normal years, field may be prepared using criss-cross harrowing followed by planking.</p>	 
6.	<p>कार्बनिक खाद का प्रयोग: पोषण प्रबंधन के लिए, अंतिम बखरनी से पूर्व गोबर की खाद (5-10 टन/हे) या मुर्गी की खाद (2.5 टन/हे) को खेत में फैलाकर अच्छि तरह मिला दे.</p> <p>Use of Organic Manure: Apply well-decomposed FYM @ 5-10 t/ha or Poultry Manure @ 2.5 t/ha before the last harrowing.</p>	 <p>गोबर की खाद को खेत में फैलाए.</p>

7.	<p>विगत कुछ वर्षों से फसल में सुखा, अतिवृष्टि या असामयिक वर्षा जैसी घटनाये देखि जा रही हैं. ऐसी विपरीत परिस्थितियों में फसल को बचाने हेतु सलाह हैं कि सोयाबीन की बोवनी के लिए बी.बी.एफ (चौड़ी क्यारी प्रणाली) या (रिज-फरो पद्धति) कुड-मेड-प्राणाली का चयन करें तथा सम्बंधित यन्त्र या उपकरणों का प्रबंध करें.</p> <p>The unfavorable incidences like drought or heavy rains for prolonged period as well incessant rains have been increasingly reported in recent years. The soybean farmers are requested to use Broad Bed Furrow (BBF) or Ridge & Furrow. This will facilitate managing the crop both in case of waterlogging as well as drought situation.</p>	 <p>चौड़ी क्यारी (BBF) पद्धति से बोवनी</p>  <p>कुड-मेड (रिज फरो) पद्धति से बोवनी</p>
8.	<p>बोवनी के लिए अनुशंसित सस्य क्रियाओं का अनुपालन: दुरी: उत्पादन की दृष्टि से प्रति हेक्टेयर पौध संख्या अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु हैं. अतः सोयाबीन किस्म के प्रकार (फैलनेवाली/सीधी बढवार) के अनुसार 30-45 सेमी कतारों पर तथा 5-10 सेमी पौधों की दूरी पर बोवनी करें. Spacing: This is very important parameter to have optimum plant population. The recommended row-to-row spacing for erect type soybean is 30 cm while for spread type it should by 45 cm at 5-10 cm plant to plant distance.</p>	
9.	<p>बीज दर: सोयाबीन में बड़े आकार के बीज की तुलना में छोटे या माध्यम आकार के बीज की अंकुरण क्षमता अधिक होती हैं. अतः न्यूनतम 70% बीज अंकुरण, बीज का आकार एवं अनुशंसित दुरी को ध्यान में रखकर 60-75 किग्रा/हे. बीज दर अपनाता उत्पादन एवं आर्थिक दृष्टि से लाभकारी होगा. Seed Rate: In soybean, the germinability of small/medium seed size is invariably higher than the bold seeded soybean varieties. Therefore, the seed rate of only 60-75 kg/ha will be economically viable for the seed having good germination.</p>	
10.	<p>बोवनी की विधि : कृषकों को सलाह हैं कि जहाँ तक संभव हो सोयाबीन की बोवनी बी.बी.एफ (चौड़ी क्यारी प्रणाली) या (रिज-फरो पद्धति) कुड-मेड-प्रणाली या रेज बेड पद्धति से करें. Farmers are advised to follow Broad Bed Furrow (BBF) or Ridge & Furrow methods or Raised Bed Methods for sowing.</p>	

Annexure-1 : Zone-wise sowing time, seed rate and list of recommended fungicides and herbicide for soybean

परिशिष्ट -1 देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए सोयाबीन बोवनी का उपयुक्त समय, एवं बीज दर तथा बोवनी के समय उपयोगी फफूंदनाशक एवं खरपतवार नाशकों की सूची

क्षेत्र Zone	उचित बुआई का समय*	बीज दर (कि.ग्रा./हे)
मध्य (Central)	जून June 20- 5जुलाई/July	65
उत्तर पूर्वी पहाड़ी (North-East Hill)	15- 30जून/June	55
उत्तर मैदानी (Northern Plain)	जून June 20- 5जुलाई/July	65
पूर्वी (Eastern)	15- 30जून/June	55
दक्षिण (Southern)	15- 30जून/June	65

*मानसून के आगमन पश्चात 100 मिमी. वर्षा होने पर

तालिका-2 विभिन्न क्षेत्रों के लिए पोषक तत्वों की मात्रा एवं उनके स्रोत

क्षेत्र Zone	एन:पी:के:एस (कि.ग्रा./हे.) NPKS (kg/ha)	उर्वरकों के स्रोत एवं मात्रा Fertilizer Sources and Quantity
मध्य (Central)	25:60:40:20	56 कि .ग्रा युरिया, 375कि .ग्रा .सुपर फास्फेट एवं 67कि .ग्रा .म्युरेट ऑफ पोटाश
दक्षिण (Southern)	25:80:20:30	56 कि .ग्रा युरिया, 500कि .ग्रा .सुपर फास्फेट एवं 34कि.ग्रा .म्युरेट ऑफ पोटाश
उत्तर मैदानी (Northern Plain)	25:75:25:37.5	56 कि .ग्रा युरिया, 470कि .ग्रा .सुपर फास्फेट एवं 42कि. ग्रा .म्युरेट ऑफ पोटाश
उत्तर पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र एवं पूर्वी क्षेत्र (North-East Hill) and Eastern Zone	25:100:50:50	56 कि .ग्रा युरिया, 625कि .ग्रा .सुपर फास्फेट एवं 84कि .ग्रा .म्युरेट ऑफ पोटाश

मध्य क्षेत्र के लिए अनुशंसित पोषक तत्वों (25:60:40:20 किग्रा/हे) नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश व सल्फर की पूर्ति निम्न प्रकार से की जा सकती हैं.

- 56 कि .ग्रा युरिया, 375कि .ग्रा .सुपर फास्फेट एवं 67कि .ग्रा .म्युरेट ऑफ पोटाश) **अथवा**
- 125 किग्रा DAP+67 किग्रा MOP+25 किग्रा बेंटोनेट सल्फर **अथवा**
- मिश्रित उर्वरक 12:32:16 @ 200 किग्रा+ 25 किग्रा बेंटोनेट सल्फर
- प्रति हेक्टेयर 25 किग्रा जिंक सल्फेट+50 किग्रा आयरन सल्फेट (आवश्यकता अनुसार)

सोयाबीन फसल के अनुशंसित खरपतवारनाशक एवं बीजोपचार उपयोगी फफूंदनाशकों की सूची
List of herbicides, insecticides and fungicides recommended for soybean

सोयाबीन की फसल में अनुशंसित खरपतवारनाशक

क्रं.	खरपतवारनाशक का प्रकार Type of Herbicide	रासायनिक नाम Technical Ingredient	मात्रा/हेक्टे. Dose/he
1	बौवनी पूर्व उपयोगी (पीपीआई) PPI Herbicides	डायक्लोसुलम+ पेण्डीमिथालीन (22.5 + 875 सक्रीय तत्व/ha) Diclosulam 0.9% + Pendimethalin 35% SE (22.5 + 875 a.i./ha)	2.5 ली.
		पेण्डीमिथालीन+इमेथेथापायर	2.5-3.0 ली.
		फ्लूक्लोरलिन Fluchloralin 45% EC	2.22-3.33 ली.
2	बौवनी के तुरन्त बाद (पीई) PE Herbicides	डायक्लोसुलम+ पेण्डीमिथालीन (22.5 + 875 सक्रीय तत्व/ha) Diclosulam 0.9% + Pendimethalin 35% SE	2.5 ली.
		डायक्लोसुलम 84 डब्ल्यू.डी.जी. Diclosulam 84% WDG	26-30 ग्राम
		सल्फेन्ट्राझोन 39.6 एस.सी. Sulfentrazone 39.6% w/w SC	0.75 ली.
		क्लोमोझोन 50 ई.सी. Clomazone 50% EC	1.50 - 2.00 ली.
		पेण्डीमिथालीन 30 ई.सी. Pendimethalin 30% EC	2.50-3.30 ली.
		पेण्डीमिथालीन 38.7 सी.एस. Pendimethalin 38.7% CS	1.50-1.75 कि.ग्रा.
		फ्लूमिआक्साझिन 50 एस.सी. Flumioxazin 50% SC	0.25 ली.
		मेट्रीब्युझिन 70 डब्ल्यू.पी. Metribuzin 70% WP	0.75-1.00 कि.ग्रा.
		सल्फेन्ट्राझोन+क्लोमोझोन Sulfentrazone 28% + Clomazone 30% WP	1.25 ली.
	पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यू.जी. Pyroxasulfone 85% w/w WG	150 ग्राम.	

सोयाबीन में विभिन्न रोगों के नियंत्रण हेतु अनुशंसित रसायन एवं उपयोग की विधिया

उपचार विधि एवं रसायन (Method/Chemical)	मात्रा Dose	रोग Disease
अ .बौवनी के समय बीजोपचार		
एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 2.5%+ थायोफिनेट मिथाईल 11.25%+ थायामेथोक्साम 25% एफ. एस. Azoxystrobin 2.5% + Thiophanate Methyl 11.25% + Thiamethoxam 25% FS	10 मि.ली./कि.ग्रा. बीज	चारकोल रॉट, एन्थ्रेकनोज एवं बड ब्लाइट, कॉलर रॉट, रूट रॉट, पर्पल सीड स्ट्रेन, फ्राग आई लिफ स्पॉट, नवजात पौध सडन जैसे बीज जनित रोग Charcoal Rot, Anthracnose, Bud Blight, Collar Rot, Root Rot, Purple Seed Strain, Frog Eye Leaf Spot, seedling rot and seed borne diseases
पेनफ्लूफेन+ट्रायफ्लोक्सिस्ट्रोबीन FS Penflufen 13.28% w/w + Trifloxystrobin 13.28% w/w FS	0.8-1 मि.ली./कि.ग्रा. बीज	
कार्बोक्सिन 37.5%+थायरम 37.5% Carboxin37.5%+ Thiram37.5% WS	3 ग्राम./कि.ग्रा. बीज	
कार्बेन्डाजिम 25%+ मन्कोजेब 50% डब्ल्यू.एस. Carbendazim + Mancozeb WP	3 ग्राम./कि.ग्रा. बीज	

फ्लुक्सापग्रोक्साड Fluxapyroxad 333 g/l SC	1 ml/kg seed	रायजोक्टोनिया रूट रॉट, कोटीलीडनरु स्पॉट Rhizoctonia Root Rot, Cotyledonary spot
थायोमिथोक्सम Thiamethoxam 30 FS	10 मि.ली./कि.ग्रा. बीज	पीला मोजाईक वायरस YMV
इमिडाक्लोप्रिड Imidacloprid 48 FS	1.25 मि.ली./कि.ग्रा.बीज	

परिशिष्ट 2 (Annexure-2): देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अनुशंसित सोयाबीन की उन्नत किस्में

List of Soybean varieties recommended for different areas.

<p>(मध्य क्षेत्र : मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश का बुन्देलखण्ड भाग, राजस्थान, गुजरात, उत्तर-पश्चिमी महाराष्ट्र Central Zone: Madhya Pradesh, Bundelkhand Region of Uttar Pradesh, Rajasthan, Gujarat, North-West Region of Maharashtra : JS 23-03, JS 23-09, MAUS 731, Gujarat Soya 4, JS 22-12, JS 22-16, NRC 165, NRC 157, MAUS 725 (Maharashtra*), NRC 150, Phule Durva (KDS 992 Maharashtra*), JS 21-72, RVSM 2011-35, AMS 100-39 (PDKV Amba), NRC 142, MACS 1520, RSC 10-46, RSC 10-52, AMS-MB-5-18 (Suvarn Soya)</p>
<p>2. पूर्वी क्षेत्र (छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल Eastern Zone: Chhattisgarh, Jharkhand, Bihar, Orissa and West Bengal एवं 3. उत्तर पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र: असम, मेघालय, मणीपुर, नागालैण्ड व सिक्किम Northern Hill Zone: Assam, Meghalaya, Manipur, Nagaland, & Sikkim : RSC 10-71, RSC 10-52, Birsa Soya-4 (Jharkhand*), MACS 1407, MACS 1460, NRC 128, RSC 11-07 and RSC 10-46</p>
<p>4. उत्तरी मैदानी क्षेत्र: पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश के पूर्वी मैदान, मैदानी उत्तराखण्ड व पूर्वी बिहार Northern Plain Zone: Punjab, Haryana, Delhi, North Eastern Plains of Uttar Pradesh, Plains of Uttarakhand and Eastern Bihar: Pusa Soybean 21, NRC 149, Pant Soybean 27, PS 1670, SL 1074, SL 1028, NRC 128, Uttarakhand Black Soybean (Bhat 202-Uttarakhand*) SL 979, SL 955, Pant Soybean 26 (PS 1572), PS 1368, PS 24 (PS 1477), VLS 89</p>
<p>5. उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र: हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र: (Northern Hill Zone) : Himachal Pradesh and Hill Region of Uttarakhand NRC 197, VLS 99, Him Palam Soya-1 (Himachal Pradesh*), Pant Soybean 25 (PS 1556), Shalimar Soybean-1 (J&K)</p>
<p>6. दक्षिणी क्षेत्र: कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश व महाराष्ट्र का दक्षिणी भाग: Southern Zone: Karnataka, Tamil Nadu, Telangana, Andhra Pradesh, Southern Part of Maharashtra: ALSB 50 (Telangana*), MAUS 725 (Maharashtra*), Phule Durva (KDS 992 (Maharashtra*) NRCMACS 1667, NRC 142, MACS 1460, NRC 132, DSb 34, KDS 753 (Phule Kimaya), KBS 23 (Karnataka*)</p>
